हाग्गै

मंदिर बनाने का समय

1 परमेश्वर यहोवा का सन्देश नबी हाग्गै के द्वारा
शालतीएल के पुत्र यहूदा के शासक जरुब्बाबेल और
यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू को मिला। यह
सन्देश फारस के राजा दारा के दूसरे वर्ष के छठें
महीने के प्रथम दिन मिला था। इस सन्देश में कहा गया:
2सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "लोग कहते हैं कि
यहोवा का मंदिर बनाने के लिये समय नहीं आया है।"

3तब यहोवा का संदेश नबी हाग्गै के द्वारा आया,
जिसमें कहा गया था: 4"क्या यह तुम्हारे स्वयं के लिये
लकड़ी मढ़े मकानों में रहने का समय है जबकि यह
मंदिर अभी खाली पड़ा है? 5यही कारण है कि
सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: जो कुछ तुम्हारे साथ
घट रहा हैं उस के बारे में सोचो!

6तुमने बोया बहुत है, पर तुम काटते हो नहीं के
बराबर। तुम खाते हो, पर तुम्हारा पेट नहीं भरता। तुम
पीते हो, पर तुम्हें नशा नहीं होता। तुम वस्त्र पहनते हो,
किन्तु तुम्हें पर्याप्त गरमाहट नहीं मिलती। तुम जो थोड़ा
बहुत कमाते हो पता नहीं कहां चला जाता है; लगता है
जैसे जेबों में छेद हो गए हैं!'

7"सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'जो कुछ तुम्हारे
साथ घट रहा है उसके बारें में सोचो! 8पर्वत पर चढ़ो।
लकड़ी लाओ और मंदिर को बनाओ। तब मैं मंदिर से
प्रसन्न होऊँगा, और सम्मानित होऊँगा।'" यहोवा यह
सब कहता है।

9सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम बहुत अधिक
पाने की चाह में रहते हो, किन्तु तुम्हें नहीं के बराबर
मिलता हैं। तुम जो कुछ भी घर पर लाते हो, मैं इसे उड़ा
ले जाता हूँ! क्यो? क्योंकि मेरा मंदिर खंडहर पड़ा है।
किन्तु तुम लोगों में हर एक को अपने अपने घरों की
पड़ी है। 10यही कारण है कि आकाश अपनी ओस तक
रोक लेता है, और इसी कारण भूमि अपनी फसल नहीं
देती। ऐसा तुम्हारे कारण हो रहा है।"

11यहोवा कहता है, "मैंने धरती और पर्वतों पर सूखा
पड़ने का आदेश दिया है। अनाज, नया दाखमधु, जैतून
का तेल, या वह सभी कुछ जिसे यह धरती पैदा करती
है, नष्ट हो जायेगा! तथा सभी लोग और सभी मवेशी
कमजोर पड़ जायेंगे।"

नये मंदिर के कार्य का आरम्भ

12तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और यहोसादाक
के पुत्र महायाजक यहोशू ने सब बचे हुये लोगों के साथ
अपने परमेश्वर यहोवा का सन्देश और उसके भेजे हुये
नबी हाग्गै के वचनों को स्वीकार किया और लोग
अपने परमेश्वर यहोवा से भयभीत हो उठे।

13परमेश्वर यहोवा के सन्देशवाहक हाग्गै ने लोगों
को यहोवा का सन्देश दिया। उसने यह कहा, "मैं तुम्हारे
साथ हूँ।"

14तब परमेश्वर यहोवा ने शालतीएल के पुत्र यहूदा
के शासक जरूब्बाबेल को प्रेरित किया और परमेश्वर
यहोवा ने यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू को भी
प्रेरित किया और परमेश्वर यहोवा ने बाकी के सभी
लोगों को भी प्रेरित किया। तब वे आये और अपने
सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा के मंदिर के निर्माण में
काम करने लगे। 15उन्होंने यह राजा दारा के दूसरे वर्ष
के छठें महीने के चौबीसवें दिन किया।

यहोवा का लोगों को प्रेरित करना

2 यहोवा का सन्देश सातवें महीनें के इक्कीसवें दिन
हाग्गै को मिला। सन्देश में कहा गया, 2"अब यहूदा
के शासक शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल, यहोसादाक
के पुत्र महायाजक यहोशू और जो लोग बचे हैं उनसे
बातें करो और कहो: 3"क्या तुममे कोई ऐसा बचा हैं
जिसने उस मंदिर को अपने पहले के वैभव में देखा है।
अब तुमको यह कैसा लग रहा है? क्या खण्डहर हुआ
यह मन्दिर उस पहले वैभवशाली मन्दिर की तुलना में
कहीं भी ठहर पाता हैं? 4किन्तु जरुब्बाबेल, अब तुम
साहसी बनों! यहोवा यह कहता है, 'यहोसादाक के पुत्र
महायाजक यहोशू, तुम भी साहसी बनो और देश के
सभी लोगों तुम भी साहसी बनो!' यहोवा यह कहता है,
'काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ!' सर्वशक्तिमान
यहोवा यह कहता है!"

5यहोवा कहता है, "जहाँ तक मेरी प्रतिज्ञा की बात है,
जो मैंने तुम्हारे मिम्र से बाहर निकलने के समय तुमसे
की है, वह मेरी आत्मा तुममें हैं। डरो नहीं! 6क्यों?
क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'एक बार
फिर मैं शीघ्र ही पृथ्वी और आकाश एवं समुद्र और

सूखी भूमि को कम्पित करूँगा! 7मैं सभी राष्ट्रों को कंपा दूंगा और वे सभी राष्ट्र अपनी सम्पत्ति के साथ तुम्हारे पास आएंगे। तब मैं इस मंदिर को गौरव से भर दूंगा! सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है। 8उनकी चाँदी मेरी हैं और उनका सोना मेरा है।' सर्वशक्तिमान यहोवा यही कहता है। 9इस मंदिर का परवर्ती गौरव प्रथम मंदिर के गौरव से बढ़कर होगा। सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है 'और इस स्थान पर मैं शान्ति स्थापित करूँगा। सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है!"

कार्य आरंभ हो चुका है वरदान प्राप्त होगा

10यहोवा का सन्देश दारा के दूसरे वर्ष के नौवें महीने के चौबीसवें दिन नबी हाग्गै को मिला। सन्देश में कहा गया था, 11सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, अब याजक से पूछो कि व्यवस्था क्या है:

12"संभव है कोई व्यक्ति अपने कपड़ों की तहों में पवित्र मांस ले चले। संभव है कि उस कपड़े की तह से जिसमें वह पवित्र मांस ले जा रहा हो, रोटी, या पका भोजन, दाखमधु, तेल या किसी अन्य भोजन का स्पर्श हो जाय। क्या वह चीज जिसका स्पर्श तह से होता है पवित्र हो जायेगी?"

याजक ने उत्तर दिया, "नहीं।"

13तब हाग्गै ने कहा, "संभव है कोई व्यक्ति किसी शव को छूले। तब वह अपवित्र हो जाएगा। किन्तु यदि वह किसी चीज को छूएगा तो क्या वह अपवित्र हो जायेगी?"

तब याजक ने उत्तर दिया, "हाँ, वह अपवित्र हो जाएगी।"

14तब हाग्गै ने उत्तर दिया, "परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे सामने इन लोगों के प्रति वही नियम है, और वही नियम इस राष्ट्र के प्रति है! उसके हाथों ने जो कुछ किया वही नियम उसके लिए भी है। जो कुछ वे अपने हाथों भेंट करेंगे वह भी अपवित्र होगा। 15किन्तु अब कृपया सोचें, आज के पहले क्या हुआ, इसके पूर्व कि यहोवा, परमेश्वर के मंदिर में एक पत्थर पर दूसरा पत्थर रखा गया था? 16एक व्यक्ति बीस माप अनाज की ढेर के पास आता है, किन्तु वहाँ उसे केवल दस ही मिलते हैं और जब एक व्यक्ति दाखमधु के पीपे के पास पचास माप निकालने आता है तो वहाँ वह केवल बीस ही पाता है! 17मैंने, तुम्हें और तुम्हारे हाथों ने जो कुछ किया उसे दण्ड दिया। मैंने तुमको उन बीमारियों से, जो पौधों को मारती है, और फफूंदी एवं ओलो से, दण्डित किया। किन्तु तुम फिर भी मेरे पास नहीं आए।' यहोवा यह कहता है।"

18यहोवा कहता है, "इस दिन से आगे सोचो अर्थात नौवें महीने के चौबीसवें दिन से जिस दिन यहोवा, के मंदिर की नींव तैयार की गई। सोचो। 19क्या बीज अब भी भण्डार–गृह में है? क्या अंगूर की बेलें, अंजीर के वृक्ष, अनार और जैतून के वृक्ष अब तक फल नहीं दे रहे है? नहीं! किन्तु आज के दिन से, आगे के लिए मैं तुम्हे आशीर्वाद दूँगा।"

20तब महीने के चौबीसवें दिन हाग्गै को दूसरी बार यहोवा का सन्देश मिला। सन्देश में कहा गया, 21"यहूदा के प्रशासक जरुब्बाबेल से कहो, 'मैं आकाश और पृथ्वी को कंपाने जा रहा हूँ 22और मैं राज्यों के सिंहासनों को उठा फेंकूंगा और राष्ट्रों के राज्यों की शक्ति को नष्ट कर दूंगा और मैं रथों और उनके सवारों को नीचे फेंक दूंगा। तब घोड़े और उनके घुड़सवार गिरेंगे। भाई, भाई का दुश्मन हो जाएगा। 23सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं उस दिन शालतीएल के पुत्र, अपने सेवक, जरुब्बाबेल को लूंगा।" यहोवा परमेश्वर यह कहता है और मैं तुम्हें मुद्रा अंकित करने की अंगूठी बनाऊँगा। क्यों? क्योंकि मैंने तुम्हें चुना है!"

सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा है।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0 **B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2**
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6 **B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8**

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads